

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 2: गर्भस्थ भगवान् की स्तुति

14 September 2026



जैसे ही भगवान् देवकी के गर्भ में स्थान ग्रहण करते हैं, बन्दी माता घट में बन्द दीपशिखा के समान प्रकाशित हो उठती हैं — और ब्रह्मा, शिव, नारद तथा समस्त देवगण समस्त शास्त्रों की सबसे मनोहर स्तुतियों में से एक गाने के लिए एकत्र होते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्कम में पुनः आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में भगवान् के अवतरण की भूमि तैयार हुई थी: पृथ्वी माता की पुकार, क्षीरसागर पर दिया गया वचन, तथा कंस का अत्याचार, जिसने वसुदेव और देवकी को बन्दी बनाकर उनके नवजात पुत्रों का वध किया। यह द्वितीय अध्याय कथा को कृष्ण-जन्म की देहली तक ले आता है। कंस का उत्पीड़न यदुओं को तितर-बितर कर देता है; भगवान् का अंश-रूप अनन्त देवकी के सातवें गर्भ के रूप में प्रवेश करता है और मायावी रूप से रोहिणी में स्थानान्तरित हो जाता है; और अन्ततः स्वयं परम भगवान् देवकी के गर्भ में स्थान ग्रहण करते हैं। जब बन्दी माता एक अलौकिक तेज से प्रकाशित होने लगती हैं, तब कंस भय से ग्रस्त हो जाता है — और ब्रह्मा तथा शिव के नेतृत्व में देवगण उतरकर वह प्रसिद्ध स्तुति गाते हैं जिसे गर्भ-स्तुति कहा जाता है, अर्थात् गर्भस्थ भगवान् का स्तवन।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 2 (द्वितीय अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: गर्भस्थ भगवान् की देवताओं द्वारा स्तुति
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित से कहते हुए); और आगे सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य के ऋषियों से कहा गया
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित (शुकदेव की कथा के भीतर); नैमिषारण्य में एकत्र ऋषिगण
- मुख्य स्थल: मथुरा में कंस का कारागार-भवन; व्रज में गोकुल नामक गोप-ग्राम; तथा वे स्वर्गिक लोक जहाँ से देवता उतरते हैं
- केन्द्रीय विषय: कंस द्वारा यदुओं का उत्पीड़न, अनन्त (बलराम) के गर्भ का रोहिणी में स्थानान्तरण, देवकी के गर्भ में परम भगवान् का प्रवेश, तथा देवताओं की स्तुति
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 10, अध्याय 2, श्लोक 1–42
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

प्रथम अध्याय में अभिमानी राजाओं के भार से पीड़ित पृथ्वी ने देवताओं को क्षीरसागर पर प्रार्थना के लिए प्रेरित किया, जहाँ भगवान् ने वसुदेव के घर अवतार लेने का वचन दिया। एक आकाशवाणी ने कंस को चेतावनी दी कि देवकी का आठवाँ पुत्र उसका वध करेगा; भयभीत राजा ने दम्पति को बन्दी बनाया, उनके पुत्रों का एक-एक करके वध किया, और अपने ही पिता उग्रसेन का सिंहासन भी छीन लिया। यह अध्याय कंस के अत्याचार की चरम अवस्था से आरम्भ होता है।

कंस का उत्पीड़न तथा यदुओं का पलायन

श्रीशुकदेव अपनी कथा को यह वर्णन करते हुए आगे बढ़ाते हैं कि कंस की क्रूरता कितनी गहराई तक फैल चुकी थी। मगध के प्रबल शासक जरासन्ध से — जिसकी दो पुत्रियों से उसने विवाह किया था — मैत्री करके, तथा अनेक दैत्य राजाओं का सहारा पाकर — प्रलम्ब, बक, चाणूर, तृणावर्त, और भक्षक अघासुर, इनके साथ मुष्टिक, अरिष्ट, द्विविद, पूतना, केशी, तथा धेनुक, और बाण तथा भौम के नेतृत्व वाले अन्य दैत्य शासक — शक्तिशाली कंस यदुवंश के विनाश में जुट गया।

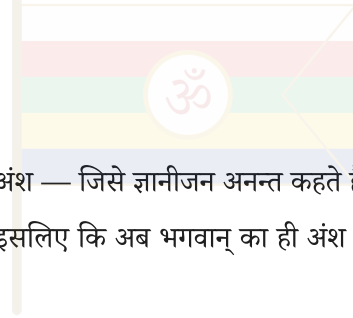


कंस तथा उसके दैत्य सहयोगियों से पीड़ित होकर यदुओं को अपने घर छोड़कर कुरु, पञ्चाल तथा अन्य पड़ोसी राज्यों में शरण लेनी पड़ती है (श्लोक 1-3)।

चारों ओर से पीड़ित होकर यदुओं को अपने घर छोड़ने पड़े, और वे सुरक्षा के लिए पड़ोसी राज्यों — कुरु, पञ्चाल, केकय, शाल्व, विदर्भ, निषध, विदेह तथा कोसल — में जा बसे। फिर भी उनके कुछ स्वजन कंस के समीप रहकर उसकी सेवा करते रहे।

सातवाँ गर्भ: बलराम का देवकी के गर्भ में प्रवेश

जब देवकी के छह शिशु-पुत्रों का वध हो चुका था, तब भगवान् विष्णु का एक अंश — जिसे ज्ञानीजन अनन्त कहते हैं — देवकी के सातवें गर्भ के रूप में प्रविष्ट हुआ, जो उनके लिए हर्ष और शोक दोनों का स्रोत बना: हर्ष इसलिए कि अब भगवान् का ही अंश उनके भीतर निवास करता था, और शोक उन पुत्रों की स्मृति से जो पहले ही खो चुके थे।



एके तमनुरुन्धाना ज्ञातयः पर्युपासते । हतेषु षट्सु बालेषु देवक्या औग्रसेनिना ॥ ४ ॥

सप्तमो वैष्णवं धाम यमनन्तं प्रचक्षते । गर्भो बभूव देवक्या हर्षशोकविवर्धनः ॥ ५ ॥

hateṣu ṣaṭsu bāleṣu devakyā augraseninā saptamo vaiṣṇavaṁ dhāma yam anantaṁ pracakṣate garbho babhūva devakyā harṣa-śoka-vivardhanaḥ

अर्थ: जब उग्रसेन के पुत्र (कंस) द्वारा देवकी के छह शिशुओं का वध हो चुका था, तब सातवाँ गर्भ — विष्णु का वह धाम जिसे ज्ञानीजन अनन्त कहते हैं — देवकी का गर्भ बना, जिसने एक साथ ही उनके हर्ष तथा शोक दोनों को बढ़ाया। (स्कन्ध 10, अध्याय 2, श्लोक 4-5)

भगवान् का योगमाया को आदेश

अपने भक्तों — यदुओं — के हृदय में कंस द्वारा उत्पन्न भय को देखकर, विश्व के आत्मा भगवान् ने अपनी दिव्य सृजन-शक्ति योगमाया को बुलाया और उसे अपने निर्देश दिए। “हे कल्याणी देवी, गोपों तथा गौओं से समृद्ध ब्रज-भूमि को जाओ। वहाँ वसुदेव की पत्नी रोहिणी नन्द के गाँव गोकुल में रह रही हैं; और कंस के भय से उनकी अन्य पत्नियाँ भी गुप्त स्थानों में छिपी हुई हैं।”

फिर वह दिव्य योजना कही गई जिससे सातवें गर्भ की रक्षा होगी।

देवक्या जठरे गर्भ शेषाख्यं धाम मामकम् । तत् सन्निकृष्य रोहिण्या उदरे सन्निवेशय ॥ ८ ॥

devakyā jaṭhare garbhaṁ śeṣākhyam dhāma māmakam tat sannikṛṣya rohiṇyā udare sanniveśaya

अर्थ: देवकी के गर्भ में मेरा ही धाम स्थित है, वह अंश-रूप जो शेष नाम से जाना जाता है; उसे निकालकर रोहिणी के गर्भ में स्थापित कर दो। (स्कन्ध 10, अध्याय 2, श्लोक 8)

भगवान् ने आगे कहा: “फिर मैं स्वयं, अपनी समस्त दिव्य शक्तियों के साथ, देवकी का पुत्र बनूँगा, हे भद्रे, और तुम नन्द की पत्नी यशोदा से जन्म लोगी।”

अथाहमंशभागेन देवक्याः पुत्रतां शुभे । प्राप्स्यामि त्वं यशोदायां नन्दपत्न्यां भविष्यसि ॥ ९ ॥

athāham aṁśa-bhāgena devakyāḥ putratām śubhe prāpsyāmi tvaṁ yaśodāyām nanda-patnyām bhaviṣyasi

अर्थ: तब मैं, अपने अंश के साथ, देवकी के पुत्रत्व को प्राप्त करूँगा, हे भद्रे; और तुम नन्द की पत्नी यशोदा से जन्म लोगी। (स्कन्ध 10, अध्याय 2, श्लोक 9)

भगवान् ने भविष्यवाणी की कि योगमाया पृथ्वी पर धूप, नैवेद्य तथा उपहारों से पूजी जाएगी, कि लोग उसके मन्दिर बनाएँगे, और वह अनेक पावन नामों से पूजी जाएगी — दुर्गा, भद्रकाली, विजया, वैष्णवी, कुमुदा, चण्डिका, कृष्णा, माधवी, कन्यका, माया, नारायणी, ईशानी, शारदा तथा अम्बिका। उन्होंने रोहिणी के पुत्र के नामों की भी भविष्यवाणी की।

गर्भसङ्कर्षणात् तं वै प्राहुः सङ्कर्षणं भुवि । रामेति लोकरमणाद् बलभद्रं बलोच्छ्रयात् ॥ १३ ॥

garbha-saṅkarṣaṇāt taṁ vai prāhuḥ saṅkarṣaṇam bhuvi rāmeti loka-ramaṇād balabhadraṁ balocchrayāt

अर्थ: क्योंकि वह एक गर्भ से दूसरे गर्भ में खींचा जाएगा, इसलिए पृथ्वी पर लोग उसे सङ्कर्षण कहेंगे; क्योंकि वह संसार को आनन्द देता है, इसलिए राम; और अपने अतुलनीय बल के कारण, बलभद्र। (स्कन्ध 10, अध्याय 2, श्लोक 13)



भगवान् अपनी दिव्य सृजन-शक्ति योगमाया को बुलाकर उसे गर्भ रोहिणी में स्थानान्तरित करने तथा स्वयं यशोदा की पुत्री रूप में जन्म लेने का आदेश देते हैं (श्लोक 6-13)।

गर्भ का स्थानान्तरण

इस प्रकार आदेश पाकर देवी ने “तथास्तु” कहकर भगवान् की आज्ञा स्वीकार की, और उनकी प्रदक्षिणा करके पृथ्वी पर उतरी तथा जैसा कहा गया था ठीक वैसे ही उनका आदेश पूरा किया। जब योगमाया — जो प्रलय-काल में भगवान् की योगनिद्रा का ही स्वरूप है — ने गर्भ को देवकी के उदर से रोहिणी के उदर में स्थानान्तरित किया, तब मथुरा के लोग शोक से विलाप कर उठे, यह समझकर कि देवकी का गर्भ नष्ट हो गया।



योगमाया की माया-शक्ति से सातवाँ गर्भ, अंश-रूप अनन्त, देवकी के उदर से गोकुल में रोहिणी के उदर में स्थानान्तरित होता है, और बलराम के नाम से जाना जाएगा (श्लोक 14-15)।

भगवान् का देवकी के हृदय में प्रवेश

फिर वह परम क्षण आया। विश्व के आत्मा तथा अपने भक्तों के भय को हरने वाले भगवान् ने अपनी समस्त दिव्य शक्तियों के साथ वसुदेव के मन में प्रवेश किया। भगवान् विष्णु की तेजोमयी उपस्थिति को अपने भीतर धारण करके वसुदेव सूर्य के समान प्रकाशित हुए और इतने तेजस्वी हो गए कि उनकी ओर देखना भी कठिन हो गया। वसुदेव से, मानो कोई गुरु शिष्य के हृदय में एक पावन प्रतिमा अंकित कर देता हो, भगवान् देवकी के मन में प्रविष्ट हुए, जैसे पूर्व दिशा उदित होते चन्द्रमा को ग्रहण करती है। देवकी, जो अब समस्त सृष्टि को समाहित करने वाले भगवान् का ही निवास-स्थान बन गई थीं, ने उन्हें अपने भीतर धारण किया।

किन्तु कंस के भवन की चार दीवारों में बन्दी होकर वे घट में बन्द दीपशिखा के समान थीं, अथवा उस विद्वान के मन में बन्द अमूल्य ज्ञान के समान जो उसे किसी से बाँटता नहीं — उनका तेज बाहरी संसार को आनन्दित करने के लिए प्रकट न हो सका।



परम भगवान् देवकी के गर्भ में प्रवेश करते हैं, जो अब कंस के कारागार की दीवारों के भीतर घट में बन्द दीपशिखा के समान प्रकाशित होती हैं (श्लोक 16-20)।

कंस का सन्ताप

कंस इस परिवर्तन को न देख पाता, ऐसा सम्भव न था। देवकी को असाधारण कान्ति तथा शान्त, उज्ज्वल मुस्कान से भवन को प्रकाशित करते देख, वह भय से मन ही मन कहने लगा, “हरि, जो मेरे प्राणों को लेने के लिए नियत है, अवश्य ही उसके गर्भ में प्रविष्ट हो गया है, जैसे सिंह किसी गुफा में घुस जाता हो — क्योंकि वह पहले कभी इतनी तेजस्वी न थी।” वह इस संकट पर बार-बार विचार करने लगा। अजन्मे शिशु पर प्रहार करना व्यर्थ होगा, क्योंकि वह शिशु अपनी शक्ति न रोकेगा। किन्तु स्वयं देवकी का वध करना — एक स्त्री का, अपनी ही बहन का, और अब गर्भवती का — उसकी कीर्ति, उसके भाग्य तथा उसकी आयु को ही नष्ट कर देगा। ऐसा मनुष्य, उसने सोचा, जो अत्यन्त निन्दनीय कर्मों द्वारा जीवन से चिपका रहता है, जीते-जी ही मृत के समान है, जीवितों द्वारा धिक्कारा गया और नरक के घोर अन्धकार के लिए नियत।

अतः स्वयं को उस घोरतम दुष्कर्म से रोककर कंस ने देवकी को छोड़ दिया और श्रीहरि के जन्म की प्रतीक्षा में अटूट शत्रुता के साथ एक कठोर पहरे में बैठ गया। वह इतना ग्रस्त हो गया कि बैठते, लेटते, खड़े होते, खाते अथवा चलते हुए वह केवल कृष्ण का ही चिन्तन करता, और सम्पूर्ण संसार को उन्हीं से परिपूर्ण देखता।

देवताओं की स्तुति

इस पावन अवसर पर सृष्टि-व्यवस्था के मूल स्रोत ब्रह्मा तथा शिव, नारद ऋषि, अन्य महर्षियों तथा देवताओं और उनके अनुचरों के साथ कारागार में आए। सबने मिलकर देवकी के गर्भ में विराजमान भगवान् विष्णु की एक भव्य स्तुति-गान में अपने स्वर उठाए — वह स्तुति जिसे परम्परा *गर्भ-स्तुति* के रूप में हृदय से सँजोए रखती है। इसके आरम्भिक शब्द भगवान् की सत्य-रूप में शरण लेते हैं।

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यंसत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये । सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रंसत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः ॥ २६ ॥

satya-vratam satya-param tri-satyam satyasya yonim nihitam ca satye satyasya satyam ita-
satya-netram satyātmakam tvām śaraṇam prapannāḥ

अर्थ: हम आपकी शरण में आए हैं, जिनका व्रत सत्य है, जो सत्य से भी परे हैं, जो तीनों कालों में सत्य हैं, सत्य के मूल स्रोत जो सत्य में ही स्थित हैं, सत्य के भी सत्य, समस्त सत्य को देखने वाले नेत्र, और स्वरूप से सत्य ही हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 2, श्लोक 26)

देवताओं ने आगे समस्त सृष्टि को एक अनादि वृक्ष के रूप में चिन्तन किया, जो आदि प्रकृति में जड़ जमाए है, सुख और दुःख के जुड़वाँ फल धारण करता है और तत्त्वों, इन्द्रियों तथा प्राणों के माध्यम से शाखाओं में फैलता है — वह वृक्ष जिसका एकमात्र कारण, आधार तथा रक्षक भगवान् ही हैं। जिनकी दृष्टि उनकी माया से आच्छन्न है, उन्होंने कहा, वे एक ही भगवान् को अनेक मान बैठते हैं, किन्तु ज्ञानीजन उन्हें एक ही रूप में देखते हैं। संसार के कल्याण के लिए वे बारम्बार शुद्ध-सत्त्वमय रूप प्रकट करते हैं जो धर्मात्माओं को आनन्दित करते हैं। जो अपने मन को उनमें स्थिर करते हैं, वे जन्म-मृत्यु के अथाह सागर को उतनी ही सरलता से पार कर जाते हैं जैसे कोई बछड़े के खुर के गड्ढे को लाँघ जाए, उनके चरण-कमल की नौका को थामकर; और जो महात्मा पार हो चुके हैं, वे असीम करुणा से उस नौका को औरों के अनुसरण के लिए पीछे छोड़ जाते हैं।

इसके विपरीत, उन्होंने कहा, जो भक्ति के बिना शुष्क ज्ञान से मुक्ति चाहते हैं और उनके चरणों की उपेक्षा करते हैं, वे उच्च उपलब्धियों से भी गिर जाते हैं; किन्तु उनके प्रेमी भक्त, चारों ओर से रक्षित होकर, कभी मार्ग से नहीं भटकते और निर्भय होकर संसार में विचरण करते हैं। भगवान् अपना शुद्ध-सत्त्वमय रूप इसलिए धारण करते हैं ताकि लोग वेदों, यज्ञ-कर्मों, तपस्या तथा ध्यान के द्वारा उनकी उपासना कर सकें; उस कृपामय अभिव्यक्ति के बिना उद्धारक ज्ञान ही असम्भव होगा। उनके नाम तथा रूप, उन्होंने स्वीकार किया, मन से कभी पूर्णतः ग्रहण नहीं किए जा सकते और न वाणी से समाप्त किए जा सकते हैं — फिर भी जो उनकी महिमा को सुनते, गाते, स्मरण करते तथा औरों को स्मरण कराते हैं, और दैनिक कर्मों के बीच भी अपने मन को उनके चरणों में स्थिर रखते हैं, वे जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाते हैं।

आनन्दित होकर देवताओं ने घोषणा की कि भगवान् के अवतरण से पृथ्वी का भार पहले ही उतरने लगा है, और वे शीघ्र ही संसार को उनके मंगलमय चरण-चिह्नों से सुशोभित देखेंगे। उन्होंने स्वीकार किया कि वे उनके जन्म का उनकी अपनी प्रेममयी लीला के अतिरिक्त कोई कारण नहीं सोच सकते, क्योंकि वे अजन्मा हैं, और जन्म तथा मृत्यु आत्मा को केवल उनके अज्ञान के कारण प्राप्त होते हैं। उनके पूर्व अवतारों को स्मरण करते हुए — मत्स्य, अश्वग्रीव, हयग्रीव, कच्छप, नृसिंह, वराह, हंस, राजकुमार राम, ब्राह्मण परशुराम, तथा दिव्य वामन के रूप में — उन्होंने अब उनसे पुनः पृथ्वी का भार उतारने की प्रार्थना की। अन्त में वे स्वयं देवकी की ओर सान्त्वना के शब्दों के साथ मुड़े: “हे माता, सौभाग्य से सर्वशक्तिमान परम पुरुष हमारे कल्याण के लिए अपनी समस्त शक्तियों सहित आपके गर्भ में प्रविष्ट हुए हैं। अब कंस से मत डरो, क्योंकि वह अपनी ही मृत्यु को आमन्त्रित कर रहा है; आपका पुत्र यदुओं का रक्षक होगा।”

देवताओं का प्रस्थान

इस प्रकार परम पुरुष की — जिनका वास्तविक स्वरूप इस दृश्यमान विश्व से भिन्न है — स्तुति करके, और ब्रह्मा तथा शिव को अपने अग्रणी बनाकर, एकत्र देवगण अपने स्वर्गिक धामों को लौट गए, और बन्दी माता को समस्त लोकों की आशा को धारण किए हुए छोड़ गए।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् अपने भक्तों की अदृश्य व्यवस्थाओं द्वारा रक्षा करते हैं। गर्भ का रोहिणी में स्थानान्तरण दर्शाता है कि भगवान् की रक्षा प्रायः मौन रूप से, ऐसे साधनों से होती है जिन्हें संसार नहीं समझ पाता — जिस क्षण को मथुरा के लोगों ने हानि समझकर शोक किया, वह वास्तव में एक रक्षा थी (श्लोक 6-15)।
2. भगवान् स्वयं सत्य हैं। *गर्भ-स्तुति* का आरम्भ भगवान् की हर अर्थ में सत्य-रूप में शरण लेने से होता है — भूत, वर्तमान तथा भविष्य में समस्त वास्तविकता के पीछे स्थित सत्य। उन्हें खोजना ही उस एकमात्र अपरिवर्तनीय वास्तविकता को खोजना है (श्लोक 26)।
3. भक्ति हमें वहाँ पार ले जाती है जहाँ केवल ज्ञान नहीं ले जा सकता। देवता उस भक्त की तुलना, जो भगवान् के चरणों की नौका से संसार-सागर को अनायास पार कर जाता है, उस शुष्क दार्शनिक से करते हैं जो प्रेम के अभाव में उच्च उपलब्धि से भी गिर जाता है (श्लोक 30-33)।
4. भगवान् के नामों का श्रवण तथा कीर्तन मुक्ति देता है। दैनिक जीवन के व्यस्ततम क्षणों में भी उन्हें स्मरण करने भर से संसार-बन्धन ढीला पड़ जाता है — यही वह सरल किन्तु सर्वसुलभ अभ्यास है जिसे प्रोत्साहित करने के लिए यह शृंखला विद्यमान है (श्लोक 37)।
5. भगवान् प्रेम से अवतरित होते हैं, आवश्यकता से नहीं। देवता उनके जन्म का उनकी अपनी कृपामयी लीला के अतिरिक्त कोई कारण नहीं सोच पाते; उनका अवतार शुद्ध कृपा है, जो संसार के कल्याण के लिए किया गया है (श्लोक 38-40)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

घट में बन्द दीपशिखा के समान प्रकाशित देवकी के चित्र में एक शान्त विस्मय है। समस्त सृष्टि का महानतम प्रकाश उनमें प्रविष्ट हो चुका है, फिर भी बन्दी होकर वे उसे बाहर की ओर प्रकाशित नहीं कर सकतीं। कितनी बार हमारे अपने हृदय भी उस कारागार के समान अनुभव होते हैं — भीतर कुछ तेजस्वी धारण किए हुए, किन्तु कुछ समय के लिए उसे संसार को दिखा पाने में असमर्थ। यह अध्याय कोमलता से यह आग्रह करता है कि छिपा हुआ प्रकाश छिपे होने के कारण तनिक भी कम वास्तविक नहीं होता। देवता भगवान् के खुले में जन्म लेने की प्रतीक्षा नहीं करते कि तब पूजा करें; वे स्वयं कारागार में एकत्र होकर अब भी अदृश्य शिशु का गान करते हैं। श्रद्धा, यह सिखाती है, ठीक यही सन्नद्धता है — प्रकाश के छिपे रहते हुए भी उसकी आराधना करना, यह विश्वास करना कि जो भगवान् ने हमारे भीतर गुप्त रूप से रखा है, उसे वे अपने समय पर सबके समक्ष प्रकट करेंगे। तब तक, देवकी के समान, हम बस उस प्रकाश को धारण किए प्रतीक्षा करते हैं।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज भगवान् के किसी एक पावन नाम को चुनिए और उसे अपने दिन के साधारण क्षणों में — चलते, कार्य करते अथवा विश्राम करते हुए — मन ही मन दोहराइए, जैसे देवताओं ने कहा कि जो कर्म के बीच भी उन्हें स्मरण करते हैं वे मुक्त हो जाते हैं। उस नाम को भीतर धारण किया हुआ एक छोटा-सा प्रकाश बनने दीजिए, जैसे देवकी ने अपना प्रकाश धारण किया। आरम्भ करने से पूर्व एक क्षण बैठकर जप कीजिए: “ॐ

नमो भगवते वासुदेवाय।”

उपसंहार

दशम स्कन्ध का द्वितीय अध्याय हमें कृष्ण-जन्म की देहली तक ले आता है। कंस की क्रूरता यदुओं को तितर-बितर कर देती है; भगवान् की योगमाया शिशु अनन्त को रोहिणी में स्थानान्तरित कर सातवें पुत्र की रक्षा करती है, जो बलराम के नाम से जाने जाएँगे; और स्वयं परम भगवान् देवकी के गर्भ में प्रवेश करते हैं, उनके कारागार को एक ऐसे तेज से भर देते हैं जो पहरेदार राजा को भयभीत कर देता है। सबसे बढ़कर, यह अध्याय हमें गर्भ-स्तुति देता है — देवताओं की वह तेजोमयी स्तुति जो भगवान् की सत्य-रूप में शरण लेती है, भक्ति तथा स्मरण की शक्ति की प्रशंसा करती है, और इस पर आनन्दित होती है कि पृथ्वी का भार उतरने ही वाला है। सम्पूर्ण सृष्टि अब साँस रोके प्रतीक्षा कर रही है। अगले अध्याय में वह दीर्घ-प्रतीक्षित अवतरण अन्ततः घटित होता है।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य वाणी हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), द्वितीय अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिखाए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक द्वारा संबद्धता अथवा समर्थन का कोई भाव नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-2-prayers-of-the-gods-for-the-lord-in-the-womb-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट